



PROF. SHIV DATT 'NIRMOHI'

Prof. Shiv Datt 'Nirmohi' is a living encyclopedia of Duggar (Jammu region). He has been working silently but steadily to document the traditions, rituals, history, culture and heritage of Jammu region. His medium is Hindi and vernacular Dogri.

2. Born on 19th April, 1937 in Panthal (Katra Vaishno Devi, Reasi) to Shri Sawan Mal and Smt. Aasso Devi, Prof. Nirmohi completed his matriculation in 1954 and joined Education Department in 1956. He enriched his qualification and was selected for higher education department in 1976. He retired in 1995 as Associate Professor.

3. Prof. 'Nirmohi' worked for the Union Public Service Commission as subject expert of Dogri language. He served as a member of the Advisory Board of Sahitya Academy, New Delhi and many other culture and literary associations. He participated in many national and international seminars organized by Indian Universities and presented his research papers. His more than one hundred research papers have been published.

4. Prof. 'Nirmohi' explored the Duggar Pradesh (Jammu region) thoroughly and published 35 Books on the topic of Folklore, culture, history, art and Archaeology, religion, philosophy, anthropology, linguistics and heritage with the pen name "Shiv Nirmohi". He discovered many places of historical and cultural relevance and started a movement for the preservation of heritage of "Duggar" (Jammu region). He discovered intimate regional relationships in Himalayan culture ranging from Jammu & Kashmir, Himachal Pradesh, Uttarakhand and Nepal.

5. Prof. 'Nirmohi' has received various honours and awards. Jammu and Kashmir Government bestowed upon him State Award in 1972 in the field of education. He also received Bal Sahitya Award in 1980. Academy of Art, Culture and Languages bestowed upon him three best books awards in 1984, 1999 and 2011. Central Hindi Directorate, New Delhi honoured his two books in 1990 and 1993. He received Moolu Ram Thakur National Award in 2014. More than twenty literary and cultural organizations honoured him for his literary and research contributions.





प्रो. शिवदत 'निर्मोही'

प्रो. शिवदत 'निर्मोही' दुग्गर (जम्मू क्षेत्र) के जीवंत विश्वकोश हैं। वह जम्मू क्षेत्र की परंपराओं, रीति–रिवाजों, इतिहास, संस्कृति और विरासत को दर्ज करने करने के लिए बिना प्रचार के लगातार काम कर रहे हैं। उनकी भाषा हिंदी और मौखिक डोगरी है।

2. 19 अप्रैल, 1937 को पंथल (कटरा वैष्णो देवी, रियासी) में श्री सावन मल और श्रीमती आसो देवी, के घर जन्मे प्रो. 'निर्मोही' ने 1954 में मैट्रिक पास की और 1956 में शिक्षा विभाग में नौकरी करने लगे। उन्होंने आगे शिक्षा हासिल की और 1976 में उच्च शिक्षा विभाग के लिए चुने गए। वह 1995 में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. प्रो. 'निर्मोही' ने डोगरी विषय के विशेषज्ञ के तौर पर संघ लोक सेवा आयोग के लिए काम किया। उन्होंने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और कई अन्य संस्कृति और साहित्यिक संस्थाओं के सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लिया और अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। उनके सौ से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

4. प्रो. 'निर्मोही' ने दुग्गर प्रदेश (जम्मू क्षेत्र) की भरपूर खोजबीन की और लोक कथाओं, संस्कृति, इतिहास, कला और पुरातत्व, धर्म, दर्शन, नृविज्ञान, भाषा विज्ञान और धरोहर विषयों पर "शिव निर्मोही" उपनाम से 35 पुस्तकें प्रकाशित कीं। उन्होंने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्वत के कई स्थानों की खोज की और "दुग्गर" (जम्मू क्षेत्र) की विरासत के संरक्षण के लिए एक अभियान शुरू किया। उन्होंने जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और नेपाल में फैली हुई हिमालय संस्कृति के गहरे क्षेत्रीय संबंधों की खोज की।

5. प्रो. 'निर्मोही' को विभिन्न सम्मान और पुरस्कार मिले हैं। जम्मू और कश्मीर सरकार ने उन्हें 1972 में शिक्षा के क्षेत्र में राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्होंने 1980 में बाल साहित्य पुरस्कार भी प्राप्त किया। कला, संस्कृति और भाषा अकादमी ने उन्हें 1984, 1999 और 2011 में तीन सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के लिए पुरस्कार प्रदान किया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली ने 1990 और 1993 में उनकी दो पुस्तकों को सम्मानित किया। उन्होंने 2014 में मूलू राम ठाकुर राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल किया। बीस से अधिक साहित्यिक और सांस्कृतिक संगठनों ने उन्हें साहित्यिक और अनुसंधान संबंधी योगदान के लिए सम्मानित किया।